B.A. Part-I
Paper - 1st

Dr. Mithilesh Kumar
Assistant Prof. History
J.M.S College, Munger

प्र:- समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का मूल्यांकन करें। उसे भारतीय नेपोलियन क्यों कहा जाता है।

उत्तर:-

समुद्रगुप्त एक महान विजेता, पराक्रमी, संगीतज्ञ होने के साथ-साथ एक सफल शासक था। उसने केवल एक विशाल साम्राज्य ही नहीं वरन् उसे संगठित करके उसमें एक शक्तिशाली और सुव्यवस्थित केन्द्रीय शासन की स्थापना की। इलाहाबाद के लेख से प्रतीत होता है कि समुद्रगुप्त अपने पिता का सबसे बड़ा पुत्र नहीं था, किन्तु उसके चरित्र-बल तथा योग्यता के कारण चन्द्रगुप्त ने उसे ही अपना उत्तराधिकारी चुना। विद्वानों ने समुद्रगुप्त को 'भारतीय नेपोलियन' की संज्ञा दी है। सम्भवतः समुद्रगुप्त 326 ई० में गद्दी पर बैठा और 380 ई० के लगभग शासक बना रहा।

समुद्रगुप्त की बहुमुखी प्रतिभा की प्रशंसा करते हुए डॉ० मजूमदार ने लिखा है, समुद्रगुप्त की सैनिक विजयें तो महान थी ही, उसकी व्यक्तिगत साधनाएँ/उपलब्धियाँ कम नहीं थी। समुद्रगुप्त की उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं -

② महान विजेता :-

समुद्रगुप्त ने सम्पूर्ण उत्तर भारत, मध्य-भारत, दक्षिण भारत तथा सीमांत प्रदेश का वह सफल विजेता था। जैसा कि विदित है उसने आर्यावर्त के नौ राजाओं - रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपति नाग, नागसेन, अच्युत, नन्दि एवं बलवर्मा को पराजित किया। इतना ही नहीं इसने आटविक प्रदेश के 18 राजाओं को पराजित किया। प्रयाग-प्रशस्ति के में 'सर्वदक्षिणापथ राजग्रहण' शब्द मिलता है। जिसका अर्थ यह है कि समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारत के सभी राजाओं को नतमस्तक कर दिया था। दक्षिण विजय के फलस्वरूप समुद्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनने की महत्वाकांक्षा पूरी हुई। उसे समस्तावतरणदक्षः अर्थात्

अर्थात् "सौ युद्धों का विजेता" कहा गया है।

(2) महान शासक :→

समुद्रगुप्त एक महान विजेता के अतिरिक्त महान शासक भी था। अपने विशाल साम्राज्य में शासन करने के लिए उसने सामन्त प्रथा का प्रचलन किया। उसने साम्राज्य के दूरस्थ प्रान्तों का शासन अपने सामन्तों को सौंप दिया, जो समुद्र के प्रतिनिधि के रूप में शासन करते थे। सन्धिविग्राहिक, कुमारामात्य, महादण्डनायक आदि विभिन्न बड़े-बड़े पदाधिकारी थे। प्रयाग-प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि समुद्रगुप्त ने अपने ~~साम्राज्य~~ साम्राज्य को अनेक मुक्तियों तथा विषयों में विभाजित कर दिया था। मुक्ति का अर्थ आधुनिक प्रान्त और विषय का आधुनिक जनपद अथवा जिले से था।

(3) मुद्रा में सुधार :→

मुद्रा में सुधार लाकर समुद्रगुप्त ने एक कुशल शासक का परिचय दिया। उसने उत्तरकालीन कुषाणों की निम्न कोटि की स्वर्ण-मुद्राओं का परित्याग कर शुद्ध स्वर्ण-मुद्राओं का प्रचलन करवाया। उसकी स्वर्ण-मुद्राएँ छः प्रकार (गरुड़, धनुर्धर, परशु, अश्वमेध, व्याघ्र-निहन्ता एवं वीणावादन) की थीं। इनमें प्रथम तीन प्रकार की मुद्राएँ समुद्र के सैनिक एवं वीर जीवन से सम्बन्धित हैं। बयाना-निधि में समुद्रगुप्त की 183 मुद्राएँ मिली हैं जिनमें 136 गरुड़ प्रकार की हैं। दिग्विजय होने के उपलक्ष्य में उसने अश्वमेध मुद्राएँ प्रचलित की।

(4) कला प्रेमी :→

वीणावादन (गान्धर्व-शैली) भाँति की मुद्राएँ समुद्रगुप्त के कला प्रेम पर प्रकाश डालती हैं। प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार वह संगीत शास्त्र का मर्मज्ञ था। समुद्रगुप्त की व्यक्तिगत अभिरुचि, सांस्कृतिक उपलब्धियाँ,

Scanned with CamScanner

से यह पता चलता है कि वह कला प्रेमी था।

(5) महान राजनीतिज्ञ :→

डॉ० परमेश्वरी लाल गुप्त के शब्दों में ऐसा प्रतीत होता है कि समुद्रगुप्त एक शक्तिशाली तथा दृढ़-संकल्प शासक था। प्रयाग स्तम्भ लेख से हमें पता चलता है कि समुद्रगुप्त में सम्पूर्ण भारत को एकराट् बनाने की आकांक्षा थी। किन्तु, एक व्यावहारिक राजनीतिज्ञ के रूप में उसने अनुभव किया कि आक्रामक नीतियों के द्वारा यह कठिन है। अतएव उसने केवल उत्तर भारत के दो दुर्ग प्रदेशों को अपने साम्राज्य में शामिल कर एक सुसंगठित तथा सुव्यवस्थित शासन की स्थापना की। एक चतुर तथा दूरदर्शी राजनीतिज्ञ की भाँति उसने अपने साम्राज्य को सुरक्षित रखने की व्यवस्था की। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने आटविक-नरेशों को अपना सेवक बनाया। उसने विजित राजाओं को पदच्युत नहीं किया, वरन् उनका राज्य तथा उनका धन लौटा दिया। इससे वे समाट के परम भक्त बन गए। इससे गुप्त साम्राज्य को स्थायित्व प्राप्त हुआ। यह समुद्रगुप्त के एक महान् राजनीतिज्ञ होने के दावे की पुष्टि करता है।

(6) साहित्य-कला के पोषक :→

समुद्रगुप्त अद्भुत प्रतिभा का व्यक्ति था। वह न केवल शास्त्रों में वरन् शास्त्रों में भी कुशल था। वह स्वयं ही सुसंस्कृत व्यक्ति था और उसे विद्वानों की संगति बड़ी प्रिय थी। उसके मंत्री हरिषेण ने प्रयाग-प्रशस्ति में लिखा है, "संगीत, कला में उसने नारद तथा तुम्बरु को भी लज्जित कर दिया। अनेक काव्यों को लिखकर उसने कविराज की उपाधि प्राप्त की थी। इससे पता चलता है कि उसने सरस्वती और लक्ष्मी के विरोध को मिटा दिया था। वह विद्वानों का आश्रयदाता था। बौद्ध विद्वान वसुबंधु, कवि हरिषेण आदि उसके दरबार में थे।

Scanned with CamScanner

वह अपने एक सिक्के पर वीणा बजाता हुआ अंकित किया गया है। इससे उसके संगीत-प्रेमी होने का परिचय मिलता है।

(7) धर्म सहिष्णु :→

समुद्रगुप्त एक धर्म परायण सम्राट था। प्रयाग-प्रशस्ति में उसे धर्म की चहारदिवारी (धर्म प्राचीरबन्धः) कहा गया है। अपने व्यक्तिगत जीवन में वह वैष्णव था। उसकी राजाज्ञाएं गरुड़ मुद्रा में अंकित हुआ करती थी। उसके सिक्कों पर गरुड़ध्वज एवं वैष्णवधर्म के प्रतीक अंकित हैं। किन्तु, वह अन्य धर्मों (बौद्ध, जैन) के प्रति सहिष्णु थे। प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान वसुबंधु उसके दरबार में थे। श्री लंका के शासक मेघवर्ण ने बोधगया में एक बौद्ध मंदिर के निर्माण की अनुमति प्राप्त करने के लिए समुद्रगुप्त के पास एक दूत भेजा था। समुद्रगुप्त ने बौद्ध-मंदिर निर्माण की अनुमति दे दी। कलान्तर में यह मंदिर एक विशाल बौद्ध मठ के रूप में विकसित हुआ।

(8) उदार शासक :→

समुद्रगुप्त एक उदार शासक था, वह दानी तथा कोमल प्रकृति का था। विद्वानों और ब्राह्मणों को पुरस्कृत करने में वह थकता नहीं था। गुप्तवंशीय अभिलेखों में उसे कोटि गौओं एवं स्वर्ण मुद्राओं का प्रदाता कहा गया है। वह असहाय, दीन-हीन, अनाथ तथा रोगी व्यक्तियों के लिए अवलम्ब था। फाहियान के यात्रा-वृतान्त से ज्ञात होता है कि दीन-हीन, अपंग, अकिंचन एवं विधवाओं की निःशुल्क चिकित्सा की जाती थी तथा उन्हें भोजन-वस्त्र मिल जाता था। इससे समुद्रगुप्त के प्रजावत्सल होने का प्रमाण मिलता है।

भारत का नेपोलियन :→

समुद्रगुप्त वीर, साहसी तथा पराक्रमी योद्धा था। अतः स्मिथ ने उसे

'भारत का नेपोलियन' कहा है। उसके ही शब्दों में वह वास्तव में विलक्षण प्रतिभा का व्यक्ति था और वह "भारत का नेपोलियन कहने का अधिकारी है।" जिस प्रकार फ्रांस का सम्राट नेपोलियन एक महान योद्धा तथा विजेता था और अपने बाहुबल तथा रणकौशल से सम्पूर्ण यूरोप को आतंकित कर दिया था, उसी प्रकार समुद्रगुप्त ने भी अपने अलौकिक पराक्रम से न केवल समस्त भारत को बल्कि सीमान्त एवं विदेशी राज्यों को भी नतमस्तक कर दिया। नेपोलियन के विषय में कहा जाता है कि वह चालीस युद्धों के विजेता था। ~~नेपोलियन को~~ किन्तु समुद्रगुप्त को समरशत (सौ युद्धों) का विजेता कहा जाता है। यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि समुद्रगुप्त की तुलना नेपोलियन से केवल इसलिए की जाती है कि वह नेपोलियन की भाँति एक महान विजेता था। नेपोलियन की तरह घृणा, उसका धर्म, प्रतिशोध, उसका कर्तव्य और अपमान कलंक नहीं था। इस दृष्टि से समुद्रगुप्त के समक्ष नेपोलियन का व्यक्तित्व मन्द पड़ जाता है।

निष्कर्ष: हम कह सकते हैं कि समुद्रगुप्त गुप्त वंश का पराक्रमी दिग्विजयी सम्राट के अतिरिक्त कुशल शासक, प्रवीण राजनीतिज्ञ, धर्म-सहिष्णु एवं साहित्य-कला का पोषक था इसलिए इसे भारत का नेपोलियन कहा जाता है।

Scanned with CamScanner